ANSWER KEY & MARKING SCHEME · CBSE CLASS 12

# आत्म-परिचय • एक गीत — दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

हिंदी आधार · *Chapter 1 · Use this with the Board Paper · Companion to Quick Drill*

**HOW TO USE**

Attempt the Board Paper first (closed-book, full time). Then come here. For 2-mark+ questions, compare your answer to the model. For 3-4 mark questions, also consult the **Topper Templates** below — these show the exact step-by-step structure that scores full marks per CBSE marking-scheme conventions.

## MODEL ANSWERS · BOARD PAPER

### खंड क — लघु उत्तर (3 × 4 = 12 अंक)

**Q1.** 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' — कवि किस भार की बात कर रहा है? व्याख्या कीजिए। ***[3 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

**Q2.** 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में पथिक, पक्षी एवं कवि की स्थिति में क्या भेद है? स्पष्ट कीजिए। ***[3 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

**Q3.** बच्चन की 'स्नेह-सुरा' का रूपक क्या व्यक्त करता है? हालावादी सन्दर्भ में बताइए। ***[3 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

**Q4.** 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता' — इस पंक्ति में कवि अपने व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता प्रकट कर रहा है? ***[3 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

### खंड ख — दीर्घ उत्तर (6 × 2 = 12 अंक)

**Q5.** 'आत्म-परिचय' कविता में कवि ने अपने व्यक्तित्व के किन-किन विरोधाभासों को प्रकट किया है? कम-से-कम तीन उदाहरण पंक्ति-उद्धरण सहित स्पष्ट कीजिए। ***[6 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

**Q6.** 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का केंद्रीय भाव क्या है? पंक्तियों के सन्दर्भ में विस्तार से व्याख्या कीजिए। ***[6 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

### खंड ग — पद्यांश-आधारित (6 अंक)

**Q7.** पद्यांश पढ़कर उत्तर दीजिए — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' **(क)** इन पंक्तियों के रचयिता कौन हैं? कविता का नाम क्या है? **(1)** **(ख)** 'जग-जीवन का भार' से कवि का क्या तात्पर्य है? **(2)** **(ग)** इन पंक्तियों में निहित विरोधाभास का अर्थ अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। **(3)** ***[6 marks]***

> **Ans:** Full mark-by-mark model answer is in topper_answer_templates (see chapter notes). Marking scheme reward criteria: textual reference / formula application / final inference.

## ★ TOPPER ANSWER TEMPLATES — 3 TEMPLATES · MEMORISE THE FORMAT

### ★ TOPPER TEMPLATE — 5 अंक — 'आत्म-परिचय' कविता में कवि के व्यक्तित्व के विरोधाभासों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

वार्षिक

| | | |
|---|---|---|
| **Step 1** *[1 mark]* | विरोधाभास की परिभाषा | विरोधाभास उस काव्य-स्थिति को कहते हैं जिसमें कवि एक ही व्यक्ति या अनुभव के परस्पर विरोधी पक्षों को साथ-साथ प्रस्तुत करता है। बच्चन की 'आत्म-परिचय' इसी शैली पर रची गई है — कवि अपने व्यक्तित्व को विपरीत ध्रुवों के द्वंद्व के रूप में प्रकट करता है। |
| **Step 2** *[1 mark]* | पहला विरोधाभास — भार बनाम मस्ती | कवि कहता है — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ / फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' एक ओर वह जीवन का सम्पूर्ण भार ढो रहा है, दूसरी ओर इसी भार के बीच प्यार बचाए रखता है। यह दर्शाता है कि वह दुखों से हारता नहीं — वह उन्हें स्वीकार करता है और उनके साथ ही प्रेम का जीवन भी जीता है। |
| **Step 3** *[1 mark]* | दूसरा विरोधाभास — रोना बनाम गाना | 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ / मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ।' कवि स्नेह को मद्य की भाँति पीता है, साथ ही जग के नियमों की चिंता भी नहीं करता। एक ओर वह प्रेम में डूबा है — दूसरी ओर लोकमर्यादा से उन्मुक्त है। यह उसकी आत्म-निर्भरता एवं स्वच्छंदता का दोहरा प्रमाण है। |
| **Step 4** *[1 mark]* | तीसरा विरोधाभास — अकेलापन बनाम पूर्णता | 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता / मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता।' कवि कहता है कि उसका जग और संसार का जग एक नहीं — फिर भी वह अपनी कल्पना से रोज़ नए जग रचता है और उन्हें मिटाता है। उसका एकाकीपन अकेलापन नहीं — यह सृजनशील एकांत है, जिसमें वह स्वयं अपना संसार है। |
| **Step 5** *[1 mark]* | निष्कर्ष — विरोधाभास ही व्यक्तित्व | बच्चन की काव्य-दृष्टि यह है कि मानव-व्यक्तित्व किसी एक भाव से नहीं बनता — वह सुख-दुख, प्रेम-वैराग्य, संसक्ति-निरासक्ति के द्वंद्व से बनता है। 'आत्म-परिचय' इन्हीं विरोधी ध्रुवों के एक साथ जीवित रहने की घोषणा है। कवि का 'मैं' इन्हीं द्वंद्वों में पूर्ण होता है। |

**COMMON LOSS OF MARKS:**

- केवल एक विरोधाभास देकर शेष न लिखना (पूरे अंक के लिए कम-से-कम तीन विरोधाभास आवश्यक)।
- पंक्ति-उद्धरण न देना। बच्चन की वास्तविक पंक्तियाँ बिना दिए केवल भाव-व्याख्या से 1-2 अंक कट जाते हैं।
- विरोधाभास को 'भ्रम' बता देना — यह विरोधाभास का ग़लत बोध है।

### ★ TOPPER TEMPLATE — 3 अंक — 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में पथिक, पक्षी एवं कवि की स्थिति में क्या भेद है?

वार्षिक

| | | |
|---|---|---|
| **Step 1** *[1 mark]* | पथिक की स्थिति | पथिक संध्या होते ही अपने डग जल्दी-जल्दी बढ़ाता है क्योंकि उसे ज्ञात है कि घर पर उसकी प्रतीक्षा हो रही है। 'जिस घर में जा गिरते हैं किरण-सी सुहाने / उस घर में कोई होता है दीप जलाने।' पथिक की चाल में प्रत्याशा की प्रेरणा है — कोई उसे राह देख रहा है, इसी सोच से वह थका हुआ भी तेज़ चलता है। |
| **Step 2** *[1 mark]* | पक्षी की स्थिति | पक्षी संध्या में अपने पंखों को जल्दी-जल्दी फड़काकर नीड़ की ओर लौटता है क्योंकि उसके बच्चे प्रत्याशा में होंगे। 'बच्चे होंगे प्रत्याशा में' — यह छोटा-सा पक्षी भी इसी विश्वास के बल पर रात्रि-पूर्व अपने घर पहुँचना चाहता है। प्रत्याशा पथिक एवं पक्षी दोनों को गति देती है। |
| **Step 3** *[1 mark]* | कवि की स्थिति — विपरीत | कवि के लिए दृश्य उलटा है — उसका कोई प्रत्याशी नहीं। सूर्यास्त उसके लिए घर लौटने की पुकार नहीं, बल्कि उस अभाव का स्मरण है। वह स्वयं से प्रश्न पूछता है — 'मुझसे मिलने को कौन विकल?' — अर्थात् उसके लौटने पर कोई व्याकुल नहीं। यही अभाव उसके अन्तर्मन में 'चंचलता' एवं 'व्यथा' उत्पन्न करता है। बच्चन यहाँ प्रत्याशा का अभाव को मानव-व्यथा का सबसे गहन रूप कहते हैं। |

**COMMON LOSS OF MARKS:**

- तीनों स्थितियाँ अलग-अलग न दिखाना (परीक्षक प्रत्येक का अंक अलग देता है)।
- पक्षी की बात भूल जाना — सबसे अधिक छात्र यहीं अंक खोते हैं।
- कवि के अभाव को 'दुख' तक सीमित कर देना — यह 'प्रत्याशा का अभाव' है, जो दुख से सूक्ष्म है।

### ★ TOPPER TEMPLATE — 3 अंक — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' — कवि किस भार की बात कर रहा है?

वार्षिक

| | | |
|---|---|---|
| **Step 1** *[1 mark]* | भार का स्वरूप | 'जग-जीवन का भार' का अर्थ है — संसार के सम्पूर्ण अनुभवों का बोझ। यह केवल आर्थिक या पारिवारिक बोझ नहीं — यह अधूरे सपनों, टूटे रिश्तों, स्मृतियों, सामाजिक दायित्वों एवं अपने आदर्शों के निर्वाह का सम्मिलित भार है। कवि के व्यक्तित्व का यह वह पक्ष है जो जीवन की कठोर सच्चाइयों से बनता है। |
| **Step 2** *[1 mark]* | भार के साथ कवि का सम्बन्ध | महत्वपूर्ण यह है कि कवि इस भार से भागता नहीं — वह इसे 'लिए फिरता' है। 'लिए फिरता' क्रिया से स्पष्ट है कि कवि इसे साथ लेकर चल रहा है — स्वीकार करता है, टालता नहीं। बच्चन का दर्शन यह है कि जीवन-भार को नकारना नहीं, उसे अपने जीवन का अंग बनाना है। |
| **Step 3** *[1 mark]* | विरोधाभास के साथ अर्थ की पूर्णता | अगली पंक्ति में कवि कहता है — 'फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ।' अर्थात् भार के साथ-साथ वह प्रेम भी लिए चलता है। दोनों एक साथ रहते हैं। यही बच्चन की रचना का मूल — दुख जीवन का अंत नहीं, उसके साथ प्रेम भी सहज सम्भव है। 'जग-जीवन का भार' का पूर्ण अर्थ इसी विरोधी संयोग में खुलता है। |

**COMMON LOSS OF MARKS:**

- केवल 'आर्थिक भार' बताना — यह आंशिक एवं भ्रामक अर्थ है।
- 'लिए फिरता' क्रिया के अर्थ की उपेक्षा — यह क्रिया विशेष महत्व रखती है।
- अगली पंक्ति 'फिर भी प्यार लिए फिरता हूँ' को न जोड़ना — अर्थ की पूर्णता इसी विरोधी संयोग में है।

**MARKING SCHEME — GENERAL NOTES**

- विरोधाभास के प्रश्न में कम-से-कम तीन उदाहरण पंक्ति-उद्धरण सहित आवश्यक।
- 'जग-जीवन का भार', 'स्नेह-सुरा का पान', 'बच्चे प्रत्याशा में होंगे' — इन तीन पंक्तियों में से कम-से-कम एक प्रत्येक उत्तर में।
- हालावादी रूपकों को कभी शाब्दिक अर्थ न दें — सुरा = स्नेह/प्रेम का रूपक।

- 'दिन जल्दी-जल्दी' पर त्रिकोण (पथिक · पक्षी · कवि) के तीनों बिंदु आवश्यक — पक्षी सर्वाधिक छूट जाता है।
- 'लिए फिरता' क्रिया का विशेष महत्व — स्वीकार-भाव, पलायन नहीं।